بسم اللہ الرحمن الرحیم

हिफ़ाज़त

कुर्आन और हुज़ूर ﷺ की दुआओं के ज़रिये

Compiler	مرتب
AHEM Charitable Trust	اہم چیریٹیبل ٹرسٹ

Contact : Idara-e-**DEENIYAT**, Opp. Maharashtra College, Bellasis Road, Nagpada, Mumbai - 400 008

Tel. : 022 - 23051111 • Fax : 022 - 23051144

Website : www.deeniyat.com • E-mail : info@deeniyat.com

(१) किसी भी चीज़ के शर से हिफाज़त की दुआ

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

[मुस्लिम : ७०५३, ख़ौला बिनते हकीम رضي الله عنها]

तर्जमा : मैं अल्लाह तआला के मुकम्मल कलिमात की पनाह में आता हूँ तमाम मखलूक़ के शर से।

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जो शख्स किसी भी जगह पर क़याम करे फिर यह दुआ पढ़े तो जब तक वहाँ ठहरा रहेगा कोई चीज़ उस को नुक़सान नहीं पहुंचाएगी।

२ शैतान से हिफ़ाज़त की दुआ

सुबह व शाम पढ़ें

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ

مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

[अमलुल यौम वल्लैला लिब्ने सुन्नी : ४९, अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

तर्जमा : मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह में आता हूँ, जो सुनने वाला और जानने वाला है।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जो शख्स सुबह व शाम के वक्त यह दुआ पढ़ेगा तो शाम तक शैतान के शर से महफ़ूज़ हो जाएगा।

३ बदन की सलामती की दुआ

सुबह व शाम ३ मर्तबा पढ़ें

اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَدَنِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ

[अबू दाऊद : ٥٠٩٠, अबू बकरह رضي الله عنه]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मेरे बदन को दुरुस्त रखिये, ऐ अल्लाह ! मेरे कान आफियत से रखिये, ऐ अल्लाह ! मेरी आँखें आफियत से रखिये, आप के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ रोज़ाना सुबह व शाम के वक़्त यह दुआ तीन तीन बार पढ़ा करते थे।

④ नज़रे बद का इलाज

اَللّٰهُمَّ أَذْهِبْ حَرَّهَا

وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا

[अमलुल यौम वल्लैला लिन्नसई : १०३३, आमिर बिन रबीअह رضي الله عنه]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! नज़रे बद की गर्मी और उस की ठन्डक और उस की तकलीफ को दूर फर्मा।

फज़ीलत/हदीस : एक शख्स को नज़र लग गई थी तो आप ﷺ ने उस के सीने पर हाथ रख कर यह दुआ फर्माई।

५ किसी से खतरे या खौफ के वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ

فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ

مِنْ شُرُوْرِهِمْ

[अबू दाऊद : १५३७, अब्दुल्लाह बिन अबू बर्दा رضي الله عنه]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हम (अपनी हिफाज़त के लिये) आप को उन दुश्मनों के मुक़ाबले में पेश करते हैं और उन की बुराई से पनाह चाहते हैं।

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी से खतरा महसूस करते, तो यह दुआ फर्माते।

६ तमाम मुसीबतों से छुटकारे के लिये

सुबह व शाम ७ मर्तबा पढ़ें

حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

[अबू दाऊद : ५०८१, अबू दर्दा رضي الله عنه]

तर्जमा : मेरे लिये अल्लाह तआला काफी है जिस के अलावा कोई माबूद नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया और वह अर्शे अज़ीम का रब है।

फज़ीलत / हदीस : हज़रत अबू दर्दा رضي الله عنه फर्माते हैं के जो शख्स सुबह व शाम सात मर्तबा यह दुआ यक़ीन के साथ या बगैर यक़ीन के पढ़ ले तो अल्लाह तआला उस के हर अहम मसले की किफालत फर्माएंगे।

७ नुक़सान से बचने की दुआ

सुबह व शाम ३ मर्तबा पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا يَضُرُّ مَعَ
اسْمِهٖ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا
فِي السَّمَاۤءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ

[तिर्मिज़ी : ३३८८, उसमान बिन अफ्फान رضي الله عنه]

तर्जमा : अल्लाह के नाम के साथ मैं ने सुबह की जिस के नाम की बरकत से कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचाती, ज़मीन में और न आसमान में और वही खूब सुनने वाला, बड़ा जानने वाला है।

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जो शख्स सुबह व शाम तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ लिया करे, उसे कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती।

٨ ईमान पर साबित क़दमी की दुआ

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ

ثَبِّتْ قَلْبِيْ

عَلٰى دِيْنِكَ

[तिर्मिज़ी : २१४०, अनस رضي الله عنه]

तर्जमा : ऐ दिलों को फ़ेरने वाले ! मेरा दिल अपने दीन पर जमा दे।

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ कसरत से यह दुआ पढ़ा करते थे।

९ बीमारी (नज़रे बद वगैरा) से हिफाज़त की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ أَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ

يُؤْذِيْكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ أَوْعَيْنِ

حَاسِدٍ، اَللّٰهُ يَشْفِيْكَ، بِسْمِ اللّٰهِ أَرْقِيْكَ

[मुस्लिम : ५८२९, अबू सईद رضي الله عنه]

तर्जमा : मैं अल्लाह का नाम ले कर तुझ पर दम करता हूँ, हर उस चीज़ से बचने के लिये जो तुझे तक़लीफ देती है और हर नफ्स के शर से और हर हासिद की आँख के शर से। अल्लाह तुझे शिफा दे, अल्लाह का नाम ले कर मैं तुझ पर दम करता हूँ।

फज़ीलत/हदीस : हज़रत जिब्रईल عليه السلام नबी ﷺ के पास आए और अर्ज़ किया : ऐ मुहम्मद ﷺ! आप बीमार हैं ? आप ﷺ ने फर्माया : जी हाँ ! तो जिब्रईल عليه السلام ने यह दुआ दी।

(१०) आसेब और सहर से हिफ़ाज़त का नबवी नुसखा

शाम में ३ मर्तबा पढ़ें

أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ كُلُّهُ
لِلّٰهِ أَعُوذُ بِاللّٰهِ الَّذِي يُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ
تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ مِنْ شَرِّ
مَا خَلَقَ وَذَرَأَ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ

[अमलुल यौम वल्लैला लिब्ने सुन्नी : ६७]

तर्जमा : अल्लाह के लिये हम ने और पूरी सलतनत ने शाम की, तमाम तारीफें अल्लाह के लिये हैं, मैं पनाह लेता हूँ अल्लाह की, जिस ने आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोके रखा है, मखलूक़ की बुराई से और उस बुराई से जो फ़ैली है और शैतान के शर से और उस के शिर्क से।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رضي الله عنه से फर्माया : बड़ा अच्छा होता के शाम के वक्त इस दुआ को तीन मर्तबा पढ़ लेते।

११ शैतान के असरात से हिफ़ाज़त, और भी कई फवाइद

१० मर्तबा सुबह और १० मर्तबा शाम में पढ़ें

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ
لَهٗ. لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

[मुस्नदे अहमद : ८७१९, अबू हुरैरह رضي الله عنه]

फज़ीलत/हदीस : जो शख्स सुबह यह कलिमात दस मर्तबा पढ़े तो उस के लिये सौ नेकियाँ लिखी जाएँगी, और सौ गुनाह माफ किये जाएँगे और उस के लिये एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब होगा। और शाम तक हिफाज़त में रहेगा और जिस ने शाम को पढ़ा तो सुबह तक उस के लिये ऐसा ही होता है।

१२ ग़म व परेशानी दूर करने के लिये

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ

بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ

[तिर्मिज़ी : ३५२४, अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

तर्जमा : ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले, सब को थामने वाले ! मैं तेरी रहमत की उम्मीद के साथ तुझ से फर्याद करता हूँ।

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ को जब कोई ग़म या परेशानी लाहिक़ होती तो यह कहा करते।

(१३) जादू से हिफाज़त का नुसखा

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ الَّذِيْ
لَيْسَ شَيْءٌ اَعْظَمَ مِنْهُ وَبِكَلِمَاتِ
اللّٰهِ التَّآمَّاتِ الَّتِيْ لَا يُجَاوِزُهُنَّ
بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ وَّبِأَسْمَاءِ اللّٰهِ
الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا
وَمَا لَمْ اَعْلَمْ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ
وَبَرَأَ وَذَرَأَ

[मोअत्ता इमाम मालिक : ३५०२, कअब अहबार]

तर्जमा : मैं अल्लाह की अज़ीम ज़ात की पनाह माँगता हूँ के जिस से कोई चीज़ बड़ी नहीं है और पनाह माँगता हूँ अल्लाह के उन कलिमात की जिन से आगे नहीं बढ़ता है कोई नेक और कोई बुरा शख्स, (और पनाह माँगता हूँ) अल्लाह के तमाम नामों की जो मुझे मालूम है और जो मुझे मालूम नहीं है, उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो उस ने पैदा की और ठीक बनाई और फ़ैलाई।

फज़ीलत/हदीस: हज़रत कअब अहबार رضي الله عنه फर्माते हैं के अगर मैं यह दुआ न पढ़ता तो यहूद जादू के ज़ोर से मुझे गधा बना देते।

⑭ मुसीबतों से नजात हासिल करने का नबवी नुसखा

सुबह व शाम पढ़ें

اَللّٰهُمَّ أَنْتَ رَبِّيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ

عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَأَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ

الْعَظِيْمِ مَاشَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَالَمْ

يَشَأْ لَمْ يَكُنْ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ

إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ أَعْلَمُ

أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَّ

أَنَّ اللّٰهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ

نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ

أَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ

رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ

[इब्ने सुन्नी : ५७, अबू दर्दा رضي الله عنه]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! आप ही मेरे पालने वाले हैं, आप के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं है, आप ही पर मैं ने भरोसा किया और आप ही

अर्शे अज़ीम के मालिक हैं, जो कुछ अल्लाह ने चाहा वह हुआ और जो अल्लाह ने नहीं चाहा वह नहीं हुआ और गुनाहों से बचने और नेक कामों के करने की ताकत अल्लाह की मदद से ही मिलती है जो बुलन्दी वाला, अज़मत वाला है, मैं यक़ीन करता हूँ के अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाला है और यह के अल्लाह तआला का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है। ऐ अल्लाह ! मैं आप की पनाह माँगता हूँ, मेरे नफ्स की बुराई से और हर उस जानवर की बुराई से जिस की पेशानी आप के क़बज़े में है, बे शक़ मेरा रब सीधे रासते पर है।

फज़ीलत / हदीस : हज़रत अबू दर्दा رضي الله عنه फर्माते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم को फर्माते हुए सुना के जो शख्स इन कलिमात को सुबह पढ़े तो शाम तक कोई मुसीबत नहीं पहुंचेगी। और शाम को पढ़ ले तो सुबह तक कोई मुसीबत नहीं पहुंचेगी।

(१९) हर किस्म की आफियत का नबवी नुसखा

सुबह व शाम पढ़ें

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ الْعَفْوَ
وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ،
اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ الْعَفْوَ
وَالْعَافِيَةَ فِيْ دِيْنِيْ وَدُنْيَايَ
وَاَهْلِيْ وَمَالِيْ ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ
عَوْرَاتِيْ وَاٰمِنْ رَوْعَاتِيْ، اَللّٰهُمَّ
احْفَظْنِيْ مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَمِنْ

خَلْفِي وَعَنْ يَّمِيْنِي وَعَنْ شِمَالِي
وَمِنْ فَوْقِي وَأَعُوْذُ بِعَظْمَتِكَ
أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي۔

[अबू दाऊद : ५०७४, इब्ने उमर رضي الله عنهما]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं आप से आफियत माँगता हूँ, दुनिया और आखिरत में, ऐ अल्लाह ! मैं आप से माफी और सलामती माँगता हूँ मेरे दीन पर मेरी दुनिया में और मेरे घर वालों में और मेरे माल में, ऐ अल्लाह ! ढाँप ले मेरे ऐबों को और खौफ की चीजों से मुझे अमान दे। ऐ अल्लाह ! मेरी हिफाज़त कर मेरे आगे से और मेरे पीछे से और मेरे दाएं से और मेरे बाएं से और मेरे ऊपर से। और मैं आप की अज़मत की पनाह लेता हूँ इस से के हलाक किया जाऊँ मेरे नीचे से।

फज़ीलत/हदीस : हज़ूर मुहम्मद ﷺ हमेशा सुबह व शाम यह दुआ पढ़ा करते थे।

⑲ ४ चीज़ों से बचने की दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنْ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ وَمِنْ دُعَاءٍ لَّا يُسْمَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَمِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ، أَعُوْذُبِكَ مِنْ هٰؤُلَاءِ الْأَرْبَعِ

[तिर्मिज़ी: ३४८२, अब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنهما]

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! मैं न डरने वाले दिल, कुबूल न होने वाली दुआ, सैर न होने वाले नफ्स और नफा न पहुंचाने वाले इल्म से तेरी पनाह चाहता हूँ, ऐ अल्लाह ! मैं इन चारों चीज़ों से तेरी पनाह लेता हूँ।

फज़ीलत / हदीस: रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ फर्माते थे।

१७ हर नमाज़ के बाद पढ़ें

फज़ीलत/हदीस :

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया :

जो शख्स हर फर्ज़ नमाज़ के बाद

३३ मर्तबा سُبْحَانَ اللهِ

३३ मर्तबा اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

और ३४ मर्तबा اَللّٰهُ أَكْبَرُ

पढ़ता है वह कभी नुकसान में नहीं रहता।

[मुस्लिम : १३७७, कअब बिन उजरह رضي الله عنه]

⑲ मन्ज़िल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ

الرَّحِيْمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿۳﴾ اِيَّاكَ

نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿۴﴾ اِهْدِنَا

الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ

اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ

عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۧ﴿۷﴾

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

الٓـمّٓ ۚ﴿۱﴾ ذٰلِکَ الۡکِتٰبُ لَا رَیۡبَ ۚۖۛ فِیۡہِ ۚۛ
ہُدًی لِّلۡمُتَّقِیۡنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ
بِالۡغَیۡبِ وَ یُقِیۡمُوۡنَ الصَّلٰوۃَ وَ مِمَّا
رَزَقۡنٰہُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ وَالَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ
بِمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡکَ وَ مَاۤ اُنۡزِلَ مِنۡ
قَبۡلِکَ ۚ وَ بِالۡاٰخِرَۃِ ہُمۡ یُوۡقِنُوۡنَ ؕ﴿۴﴾
اُولٰٓئِکَ عَلٰی ہُدًی مِّنۡ رَّبِّہِمۡ ٭ وَ اُولٰٓئِکَ
ہُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۵﴾

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٣﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ
وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ
اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ
عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ

وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿۲۵۵﴾ لَآ اِكْرَاهَ فِي

الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ

فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ

فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ

لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۵۶﴾

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ

مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ۬ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ

مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ

النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خٰلِدُوْنَ ۝۲۵۷ لِلّٰهِ مَا

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ

تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ

يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ

وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۲۸۴ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ

اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ

كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ

وَرُسُلِهٖ ۫ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ

رُسُلِهٖ قف وَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا قف
غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿۲۸۵﴾
لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ط لَهَا
مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ط
رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ج
رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا
حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ج رَبَّنَا
وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ج
وَاعْفُ عَنَّا وقفة وَاغْفِرْ لَنَا وقفة وَارْحَمْنَا وقفة

اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ

الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۸۶﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ

اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا ۢ

بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۸﴾ ؕ

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ

مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۡ

وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ

بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ

قَدِيْرٌ ﴿۲۶﴾ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ

وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ز وَتُخْرِجُ

الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ

مِنَ الْحَيِّ ز وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ

حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ

ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ قف يُغْشِى الَّيْلَ

النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا لا وَّالشَّمْسَ

وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ ط

اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ط تَبٰرَكَ اللّٰهُ

رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٤﴾ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا
وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٥٥﴾ ۚ
وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا
وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾ قُلِ ادْعُوا
اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّامَّا تَدْعُوْا
فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ
بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ
ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ

لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ

فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ

وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا

خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَّدْعُ

مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ

فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ

الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ

وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ۝١١٨ ع

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۝١ لا فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۝٢ لا
فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۝٣ لا اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝٤ ط
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝٥ ط اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ
الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ۨالْكَوَاكِبِ ۝٦ لا وَحِفْظًا
مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝٧ ج لَا يَسَّمَّعُوْنَ
اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ

جَانِبٍ ﴿٨﴾ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ﴿٩﴾
اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ
ثَاقِبٌ ﴿١٠﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا
اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ
لَّازِبٍ ﴿١١﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ
اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا
تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا

شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّ نُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿۳۵﴾ ج

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۶﴾ فَاِذَا

انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿۳۷﴾ ج

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۸﴾ فَيَوْمَئِذٍ

لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿۳۹﴾ ج

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۰﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا

هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا

مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ

الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ

يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ
هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ
الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ
الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾
هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ
الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ
الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ﴿۱﴾
يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ
نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۙ﴿۲﴾ وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ
رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ﴿۳﴾ وَّاَنَّهٗ
كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ﴿۴﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَآ اَعْبُدُ مَا

تَعۡبُدُوۡنَ ۝۲ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ۝۳
وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدۡتُّمۡ ۝۴ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ
عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ۝۵ لَكُمۡ دِيۡنُكُمۡ وَلِىَ دِيۡنِ ۝۶

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝۱ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝۲
لَمۡ يَلِدۡ ۙ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ ۝۳ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ
كُفُوًا اَحَدٌ ۝۴

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۝۱ مِنۡ شَرِّ

مَا خَلَقَ ﴿٢﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا

وَقَبَ ﴿٣﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ﴿٤﴾

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿١﴾ مَلِكِ

النَّاسِ ﴿٢﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ﴿٣﴾ مِنْ شَرِّ

الْوَسْوَاسِ ۵ الْخَنَّاسِ ﴿٤﴾ الَّذِیْ

یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ﴿٥﴾

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿٦﴾

⑲ नुक़सान से हिफाज़त (इस्तेखारा की दुआ)

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ फर्माते हैं के जो इस्तेखारा कर लिया करे वह कभी शर्मिन्दा न होगा और न नुक़सान उठाएगा और इस्तेखारा करना नेक बख्ती की अलामत है, इस्तेखारा न करना बद किसमती है। रसूलुल्लाह ﷺ इस्तेखारा इस तरह सिखाते थे, जैसे कुर्आन की सूरतें सिखाते। आप ﷺ फर्माते हैं जब कोई अहम काम हो तो दो रकात इस्तेखारे की नियत से नफ्ल नमाज़ पढ़ने के बाद यह इस्तेखारा की दुआ पढ़ें।

नोट : लफ्ज़ هٰذَا الْأَمْرَ दो जगह आया है यहाँ पहुंचे तो अपने उस काम का नाम लें या दिल में उस काम का खयाल करें जिस के बारे में इस्तेखारा किया है।

इस्तेखारा का जवाब : ख्वाब में उस चीज़ को देख ले या दिल में कोई बात जम जाए या जिस चीज़ के लिये इस्तेखारा किया गया है उस के लिये रास्ता आसान हो जाए या रुकावट पैदा हो जाए।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ

وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَأَسْأَلُكَ مِنْ

فَضْلِكَ الْعَظِيمِ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ

وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ط

اَللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هٰذَا الْأَمْرَ

خَيْرٌ لِّي فِي دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ أَمْرِيْ

فَاقْدِرْهُ لِيْ وَيَسِّرْهُ لِيْ ثُمَّ بَارِكْ لِيْ

فِيْهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هٰذَا الْأَمْرَ

شَرٌّ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ

أَمْرِيْ فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ

وَاقْدِرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ أَرْضِنِي بِهِ

[बुखारी : ६३८२, जाबिर رضي الله عنه]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं तेरे इल्म के ज़रिये तुझ से भलाई माँगता हूँ, और तेरी कुदरत के ज़रिये तुझ से कुदरत तलब करता हूँ और तेरे अज़ीम फज्ल का तुझ से सवाल करता हूँ, इस लिये के तू (हर काम) की कुदरत रखता है और मैं (किसी भी काम की) कुदरत नहीं रखता और तू (सब कुछ) जानता है और मैं (कुछ) नहीं जानता, और तू ही तमाम छुपी हुई (बातों) को अच्छी तरह जानने वाला है। ऐ अल्लाह ! अगर तेरे इल्म में मेरे लिये यह काम मेरे दीन और दुनिया और मेरे काम के अन्जाम में बेहतर है तो उस को मेरे लिये मुकद्दर फर्मा और उस को मेरे लिये आसान कर दे, फिर मेरे लिये उस में बरकत अता फर्मा और अगर तेरे इल्म में मेरे लिये यह काम मेरे दीन और दुनिया और मेरे काम के अन्जाम में बुरा है तो उस को मुझ से और मुझ को उस से दूर फर्मा और मेरे लिये भलाई मुकद्दर फर्मा, जहाँ कहीं भी हो, फ़िर उस पर मुझे राज़ी फर्मा।